1

भारतीय संस्कृति में अर्थशास्त्र का उद्‌भव

[ORIGIN OF ECONOMICS IN INDIAN CULTURE]

भूमिका

भारतीय सांस्कृतिक विचारधारा का अध्ययन एवं विश्लेषण करने से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन भारतीय दर्शन भले ही अर्थप्रधान न रहा हो फिर भी तत्कालीन विद्वानों ने आर्थिक पक्षों पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। यहां के प्राचीन साहित्य, वेदों पुराणों, उपनिषदों, महाभारत व रामायण में आर्थिक विचारों का समावेश किसी-न-किसी रूप में देखने को मिलता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी यह संकेत करता है कि समय-समय पर विद्वानों, चिंतकों एवं ऋषि-मुनियों ने यहां के आर्थिक जीवन आर्थिक विचारों तथा आर्थिक दर्शन पर मत व्यक्त किया है।

भारतीय आर्थिक विचारों की विशेषताएं

भारतीय आर्थिक विचारों की कुछ विशेषताएं हैं, जोकि निम्न प्रकार हैं :

(1) **अर्थ को अधिक महत्व नहीं दिया गया**—भारतीय परम्परा में अर्थ या धन को सम्पूर्ण जीवन से अलग नहीं माना गया है। परिणाम यह हुआ कि अर्थ सम्बन्धी विचार अलग से संग्रह न करके यत्र-तत्र बिखरे मिलते हैं। भारत में अर्थ कभी भी साध्य नहीं रहा, सदा एक साधन के रूप में इसे स्वीकार किया गया। इसका परिणाम अर्थशास्त्र के विकास की दृष्टि से खराब ही हुआ। यदि धन का आर्थिक महत्व नहीं है, तो धन सम्बन्धी शास्त्र का भी महत्व नहीं होगा। यह परम्परा वेदों के काल से गांधीजी तक पायी जाती है। यहां तक कि वैज्ञानिक सिद्धान्तवादी आचार्य जे. के. मेहता भी इस संस्कार से मुक्त नहीं रह सके।

(2) **चिर आदर्श त्याग है, भोग नहीं**—उक्त विशेषता का एक रूप भारतीय आदर्श की भिन्नता में प्रकट हुआ है। भारत का चिर आदर्श त्याग है, भोग नहीं है। किसी भी मनीषी ने भोग को जीवन का लक्ष्य नहीं बताया। आवश्यकताओं की वृद्धि को सभी ने बुरा कहा है। उपनिषद के मन्त्रों से लेकर संतों की वाणी तक इस मत को बार-बार दुहराया गया है। ईशावास्य उपनिषद का एक प्रसिद्ध मन्त्र इस प्रकार है :

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

इसका पद्यानुवाद स्व. सियारामशरण गुप्त ने निम्न प्रकार किया है :

ईस का आवास यह सारा जगत,
जीवन यहां जो कुछ उसी से व्याप्त है,
अतएव करके त्याग उसके नाम से
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धन की किसी के भी न कर तू वासना।

अर्थात् '**त्यागपूर्वक भोग**' यह भारतीय परम्परा का विचार है। अपरिग्रह या संचय न करना भी यही बात है।

Scanned by PDF Scanner

(3) **नैतिक व व्यावहारिक विचार**—भारतीय आर्थिक विचार की एक विशेषता यह है कि वह वैज्ञानिक न होकर नैतिक एवं व्यावहारिक है, अर्थात् वैज्ञानिक अर्थशास्त्र (Positive Economics) का यहां अधिक विकास नहीं हुआ, अर्थनीति (Normative Economics) का ही अधिक विचार हुआ। अर्थव्यवस्था कैसी हो, अर्थ के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा है तथा समाज में अर्थ का क्या रूप हो, इन समस्याओं पर तो बहुत चिन्तन है, परन्तु धन का उत्पादन तथा वितरण सम्बन्धी विचार अधिक नहीं हैं और जो हैं भी वे स्पष्ट नहीं हैं। गांधीजी के विचार भी इसी विशेषता को लिये हुए हैं। उनका अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में न होकर आदर्श के रूप में ही है। परन्तु साथ ही हम यह बताना भी आवश्यक समझते हैं कि यह आदर्श कोरी कल्पना पर ही आधारित नहीं बल्कि वास्तविकता से सम्बन्धित है। यह आदर्श सम्भव है और उनकी प्राप्ति की जा सकती है। मनुष्य और समाज का आर्थिक कारण क्या है, इसके कारणों को भले ही ढूंढ़ा न गया हो, किन्तु मनुष्य और समाज का आर्थिक आचरण कैसा होना चाहिए, इस विषय पर विचारकों ने पर्याप्त प्रकाश डाला है।

(4) **शोषण का विरोध**—भारतीय विचारकों ने शोषण और आर्थिक विषमताओं को सदा ही खराब बताया है। भारत में अनादिकाल से दान, उदारता तथा दयालुता का महत्व बताया गया है। भारतीय पुराणों में ऋषी दधीच, हरिश्चन्द्र, महारथी कर्ण तथा बलि, आदि की कथाएं हैं और इतिहास भी अशोक तथा हर्ष, आदि की उदारता और दानवीरता के वर्णनों से भरा हुआ है। भारतीय विचारकों, जैसे—मनु, याज्ञवल्क्य, शुक्राचार्य, बृहस्पति तथा कौटिल्य, आदि ने राजा का कर्तव्य बताया है कि गरीबों के भरण-पोषण की व्यवस्था करे और शोषण एवं अत्याचार से उन्हें बचाये।

(5) **मतभेद कम**—एक आश्चर्यजनक विशेषता जो भारतीय आर्थिक विचारों में देखने में आती है वह यह है कि उनमें परस्पर भेद बहुत कम है। मतभेद होते हुए भी सिद्धान्तों और आदर्शों के विषय में मौलिक अन्तर नहीं है। किसी महत्वपूर्ण विचारक ने शोषण को अच्छा नहीं कहा। संग्रह को सभी ने बुरा बताया। वस्तुतः यह समानता इस कारण है कि भारत का आदर्श शेष संसार से भिन्न रहा है। इसकी परम्परा ही भौतिक न होकर आध्यात्मिक एवं नैतिक रही है।

भारतीय आर्थिक विचारों के स्रोत

भारतीय आर्थिक विचार भारतीय वाङ्मय का एक महत्वपूर्ण भाग है और लगभग सभी महत्वपूर्ण शास्त्रों एवं ग्रन्थों में पाये जाते हैं। इन विचारों के संकलन एवं प्रकाशन की दिशा में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भी कोई विशेष प्रयास नहीं हुआ है और अधिकांश ज्ञान-विज्ञान वर्तमान पीढ़ी की पहुंच से बाहर है। कारण यह है कि यह सब प्राचीन भाषाओं—संस्कृत, पाली एवं प्राकृत में ही उपलब्ध है जिनसे अधिक लोग परिचित नहीं। उसे आधुनिक भाषाओं में प्रकाशित करने की आवश्यकता है। इन स्रोतों को हम निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं :

(1) **वैदिक साहित्य**—वेद, उपनिषद, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रन्थ तथा कल्पसूत्र, आदि।

(2) **स्मृति ग्रन्थ**—मनु, शुक्राचार्य, याज्ञवल्क्य, विदुर तथा नारद, इत्यादि।

(3) **पुराण साहित्य**—महाभारत, रामायण, वायु पुराण, अग्नि, वामन, विष्णुपुराण, भागवत् तथा जातक कथाएं, इत्यादि। मुख्य पुराण 18 हैं।

(4) **प्राचीन संस्कृत साहित्य**—कालिदास, वाणभट्ट, भास, शूद्रक तथा दण्डी, आदि के ग्रंथ।

(5) **ऐतिहासिक सामग्री**—इस वर्ग में मेगस्थनीज, ह्वानच्वांग, फाहियान तथा इब्नबतूता, इत्यादि विदेशी यात्रियों के वृतांत, अलबरूनी, फरिश्ता, अबुलफजल तथा बदाऊंनी, इत्यादि इतिहासकारों के ग्रन्थ, स्तम्भों, शिलाओं तथा सिक्कों, आदि के लेख आते हैं।

(6) **कौटिल्य** (Kautilya)—कौटिल्य जो कि विष्णुगुप्त के नाम से भी विख्यात है, ने 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रन्थ की रचना की है। कौटिल्य चन्द्रगुप्त मौर्य (Chandragupta Maurya) का प्रधानमंत्री था। इस प्रकार 'अर्थशास्त्र' ग्रन्थ का रचना काल लगभग चौथी शताब्दी ई. पू. ठहरता है। उसकी पुस्तक में राज्य सम्बन्धी सभी नीतियों का समावेश किया गया है। जिनको कि सम्राट को मानना होता था।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र को यदि कार्य रूप में परिणत होने वाली राजनीतिक पुस्तक कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। कौटिल्य ने अपने इस ग्रन्थ को धर्म से सर्वथा अलग रखा है। इस प्रकार कौटिल्य के विचार निश्चय ही अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कौटिल्य की दृष्टि में राजा एवं राजा का मुख्य लक्ष्य प्रजा की भलाई करना था। इस

Scanned by PDF Scanner

प्रकार कौटिल्य राज्य के हित में समस्त प्राकृतिक साधनों (Natural Resources) के प्रयोग का भार राजा के कन्धों पर ही रखता है। उसके मतानुसार व्यापार, पशु-कल्याण, कृषि की उन्नति, खानों आदि की खुदाई एवं सिंचाई आदि का प्रबन्ध राजा को ही करना पड़ता था। इस प्रकार समस्त आर्थिक कियाओं-उत्पादन एवं विनिमय आदि एवं आर्थिक संस्थाओं आदि का विकास एवं प्रबन्ध राजा एवं राज्य के हाथ में ही था। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में करों पर भी महत्वपूर्ण प्रकार डाला है। अर्थशास्त्र में भूमि, वस्तुओं के आयात एवं निर्यात, विक्रय-कर आदि विभिन्न प्रकारों के करों का भी उल्लेख मिलता है चुंगी का भी उल्लेख मिलता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से पंचायतों एवं नगरपालिकाओं के प्रशासन पर भी प्रकाश पड़ता है। नगरपालिकाओं की कार्य प्रणाली द्वारा कौटिल्य ने आर्थिक क्रियाओं का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है। नगर में किस प्रकार कर लगना चाहिए, कितना कर लगना चाहिए, वस्तुओं का आयात एवं निर्यात किस प्रकार हो एवं वस्तुओं का मूल्य किस प्रकार ठीक बना रहे आदि पर सुन्दरता से प्रकाश डाला गया है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र के पश्चात् प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों का ज्ञान **स्मृति ग्रन्थों** के आधार पर लगाया जा सकता है। स्मृति ग्रन्थों में अधिक सामाजिक नियमों की स्थापना एवं राज्य के द्वारा किए जाने वाले कार्यों की अधिकतम जटिलता को पाया जाता है। वर्णाश्रम प्रथा को एक कुशल एवं सरल प्रजातंत्र के लिए आधार मान लिया गया था।

इस प्रकार इन ग्रन्थों के आधार पर हमें उस युग की दशा का आभास मिल जाता है। उस समय उद्योग-धंधों का स्थान अत्यन्त अल्प था एवं आर्थिक जीवन में किसी प्रकार की जटिलता नहीं थी। आर्थिक समस्याएं अत्यन्त सरल एवं सीधी थी। इस प्रकार उस जीवन में अभौतिक (Non-Materialistic) विचारों का ही विशेष महत्वपूर्ण हाथ था। सामाजिक संगठन को दृढ़ करने के लिए जाति-प्रथा का विधान बनाया गया था एवं विभिन्न व्यवसायों के लिए भी नियमों का निर्देश हो चुका था।

भारतीय आर्थिक विचारों का वर्गीकरण

भारतीय आर्थिक विचारधाराओं को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(1) **प्राचीन भारतीय विचारधारा**—इस वर्ग में वेदों से लेकर मुस्लिम युग से प्रारम्भ तक का विचार आता है।

(2) **मध्ययुगीन विचारधारा**—इसमें मुस्लिम युग का आर्थिक चिन्तन आता है।

(3) **राष्ट्रवादी विचारक**—इसमें 19वीं और 20वीं शताब्दी के कुछ विचारक तथा रमेश चन्द्र दत्त, दादाभाई नौरोजी, रानाडे तथा गोखले, आदि आते हैं।

(4) **सर्वोदय का अर्थशास्त्र**—यह गांधीजी और विनोबाजी की विचारधारा है।

(5) **समाजवादी विचार**—इस श्रेणी में जवाहरलाल नेहरू, आचार्य नरेन्द्रदेव, सम्पूर्णानन्द, जयप्रकाश नारायण, एम. एन. राय, राम मनोहर लोहिया, एस. ए. डांगे तथा अशोक मेहता आते हैं।

(6) **वैज्ञानिक सिद्धान्तवादी**—इन व्यक्तियों ने अर्थशास्त्र के वैज्ञानिक रूप का विकास किया है। जे. के. मेहता तथा ए. के. दास गुप्ता इस वर्ग के अर्थशास्त्री हैं।

(7) **मुक्त अर्थव्यवस्था के समर्थक**—राजगोपालाचारी, के. एम. मुन्शी तथा एम. आर. मसानी इस श्रेणी में आते हैं।

प्रमुख प्राचीन विचार

(1) **धन के त्यागपूर्वक भोगने (त्यक्तेन भुञ्जीथा) का सिद्धान्त**—धन जीवन का ध्येय नहीं साधन है, अतः उसे वही स्थान मिलना चाहिए। जीवन के चार पुरुषार्थ बताये गये हैं—धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष। इनमें मोक्ष साध्य है और शेष साधन हैं। महाभारत में कहा गया है कि जिसने धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष में किसी का लाभ प्राप्त नहीं किया उसका जीवन बकरी के गले के स्तन (अजागल स्तन) के समान निरर्थक है। इसमें धर्म को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। महाभारत के शान्तिपर्व में कहा है कि ''मैं अपनी भुजा उठाकर कहता हूं, परन्तु कोई सुनता ही नहीं है कि धर्म से ही अर्थ और काम की सिद्धि होती है फिर लोग धर्म का आचरण क्यों नहीं करते?'' हजारों स्थलों पर अपरिग्रह की महिमा बतायी गयी है। भागवत का निम्नांकित एक ही उदाहरण पर्याप्त है—''जितने से पेट भरे उतना ही पाने का लोगों को अधिकार है। इससे अधिक रखने वाला चोर है।''

Scanned by PDF Scanner

परन्तु यहां यह बताना आवश्यक है कि आचार्य कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में धन को सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु बताया है और शेष बातें धन पर आश्रित बतायी हैं। वस्तुतः कौटिल्य का विचार आदर्शवादी न होकर व्यावहारिक है। कौटिल्य के इस आदर्श की निन्दा भी विद्वानों ने की है।

(2) **दान का आदेश**—वेदों से लेकर पुराणों तक दान की महिमा है। तैत्तरीय उपनिषद में इसकी स्पष्ट व्यवस्था है। राजा से रंक तक सबको यथाशक्ति दान करना चाहिए। अकेले भोजन करने को गीता में पाप कहा गया है। गृहस्थ को संन्यासी, अतिथि, छात्र तथा पशु-पक्षी सभी का पालन करना चाहिए।

(3) **वर्णाश्रम के आधार पर समाज का श्रम विभाजन**—समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों में विभक्त किया गया गया था। वर्ण का विभाजन जन्म के अनुसार था या कर्म तथा गुण के अनुसार, इसमें मतभेद है। गीता में 'गुणकर्म विभागशः' से अनुमान होता है कि गुणों और कार्यों के आधार पर समाज का वर्गीकरण होना चाहिए। महावीर स्वामी ने भी लिखा है कि कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते हैं। ब्राह्मण का कार्य ज्ञान प्राप्त करना तथा पढ़ना; क्षत्रिय का सेना प्रशासन में कार्य करना, वैश्य का खेती, व्यापार तथा पशुपालन करना एवं शूद्र का काम मछली पकड़ना, शिकार खेलना, शिल्पों को चलाना तथा सेवा करना था। मनुष्य का जीवन भी ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास में विभक्त था।

(4) **आर्थिक क्रियाओं को पवित्रता का आदेश**—प्राचीन नीति का सिद्धान्त है—'यो अर्थ-शुचि स शुचि', अर्थात् जिसका आर्थिक जीवन शुद्ध है वह शुद्ध है। उत्पादन, वितरण तथा विनिमय, आदि आर्थिक क्रियाओं में मनुष्य को ईमानदार, उदार एवं न्यायपूर्ण रहना चाहिए। न तो बेईमानी से किसी धन को लेना चाहिए और न किसी का प्राप्य अपने पास रखना चाहिए।

(5) **मूल्य का सिद्धान्त**—मूल्य के सिद्धान्त का वर्णन शुक्राचार्य की शुक्रनीति में मिलता है। शुक्राचार्य ने अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन प्रथम बार किया था। उन्होंने दो प्रकार के मूल्य बताये : (1) अर्थ या अस्थायी मूल्य (Market Price), एवं (2) मूल्यक या स्थायी मूल्य।

वस्तु के अर्थ के विषय में इन्होंने लिखा है कि वह तीन बातों पर निर्भर करता है—एक है वस्तु की सुलभता या असुलभता, इसके अन्तर्गत वस्तु की पूर्ति आती है। दूसरा है वस्तु का गुण, अर्थात् उपयोगिता (Utility), तीसरी चीज है वस्तु की कामना या इच्छा, जिसे आधुनिक भाषा में मांग कह सकते हैं। शुक्राचार्य ने लिखा है, "वस्तु के अर्थ में परिवर्तन उसके सुलभ और असुलभ होने उसके गुण तथा उसकी कामना पर निर्भर होता है।" दीर्घकालीन मूल्य (मूल्यकम्) लागत पर निर्भर बताया है। जैसी लागत (व्यय) होती है वैसा मूल्य होता है।

(6) **धन की परिभाषा**—शुक्राचार्य ने धन की परिभाषा और उसका विश्लेषण सैद्धान्तिक दृष्टि से किया है। पशु, अनाज, वस्त्र तथा घास (चारा) यह सब धन है। जब इन वस्तुओं और स्वर्णादि का विनिमय किया जाता है, तब मूल्य उत्पन्न होता है।[3] कौटिल्य ने भी धन का विस्तृत वर्णन किया है।

(7) **श्रमिक संघ एवं सहकारिता का विचार**—प्राचीन भारत में दो प्रकार के संगठनों का वर्णन मिलता है—एक तो ग्राम सभा (निगम) और दूसरा कर्मचारी तथा उद्योगों में लगे हुए व्यक्तियों का संगठन (Guild) इसे समिति तथा युग, आदि कहा जाता था। प्रो. आर. सी. मजूमदार ने 27 प्रकार की समितियों का वर्णन किया है। कात्यायन (Katyayan) ने लिखा है कि समितियां कई प्रकार की होती थीं और कई नामों से पुकारी जाती थीं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सहकारी समितियों का वर्णन है। यह मजदूरों की समितियां थीं और यह लोग इकट्ठे होकर कार्य करते थे और मजदूरी को आपस में बांट लेते थे।

(8) **मजदूरी सम्बन्धी विचार**—मजदूरी सौदों (Bargain) पर निर्भर करती थी। इसमें कार्य और समय दोनों पर ध्यान दिया जाता था। शुक्राचार्य ने बहुत विस्तार में मजदूरों के कार्यकाल, मजदूरी, पेंशन, क्षतिपूर्ति, आदि का वर्णन किया है। अर्थशास्त्र में भी इसका विशद वर्णन है अगले अध्यायों में हम इसको विस्तार में बता रहे हैं।

(9) **लोक वित्त**—प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में लोक वित्त, करारोपण, लोक व्यय, आदि के विषय में बहुत अधिक लिखा गया है। शुक्रनीति, विदुर नीति, कौटिलीय अर्थशास्त्र, महाभारत, आदि में इस विषय में आश्चर्यजनक विवेचन मिलता है। एडम स्मिथ, आदि का वर्णन इस विवेचन के सामने नगण्य है। महाभारत का शान्तिपर्व तो भीष्म द्वारा कहे गये उपदेशों में इन विचारों का भण्डार ही है।

Scanned by PDF Scanner

(10) **अन्य विचार**—प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था अत्यन्त विकसित एवं समृद्ध थी। उसके नियन्त्रण और संचालन के लिए यत्रतत्र आदेश और नियम दिये हुए हैं। उद्योग, कृषि, व्यापार, समुद्र यात्रा, पोत निर्माण, सड़कों का निर्माण, नदी, समुद्र, स्थल यातायात, पशुपालन, करारोपण, कुटीर शिल्प शासकीय उद्योग इत्यादि के विषय में अपार सामग्री भारतीय वाङमय में मिलती है जिस पर शोध होने की बड़ी आवश्यकता है। विशाल जनसंख्या अच्छी मानी गयी है। भारत ने सर्वप्रथम दास प्रथा का उन्मूलन किया। कृषि को सर्वश्रेष्ठ उद्योग माना गया यद्यपि उद्योग-व्यापार को भी महत्व दिया गया है।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय आर्थिक विचारों की विशेषताएं बताइए।
2. भारतीय संस्कृति में अर्थशास्त्र की उत्पत्ति की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।
3. प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों का विवेचन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों का स्रोत बताइए।
2. भारतीय आर्थिक विचारों का वर्गीकरण कीजिए।
3. कौटिल्य के आर्थिक विचारों का संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्राचीन भारतीय आर्थिक विचारों में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
   (A) भारतीय आर्थिक विचार भारतीय दर्शन से प्रभावित है।
   (B) भोग की अपेक्षा त्याग को महत्व दिया गया है।
   (C) अर्थ को साध्य के रूप में स्वीकार किया गया है।
   (D) भारतीय आर्थिक विचारों में वर्ग संघर्ष को जन्म देने वाली बातों का समावेश नहीं है।
2. भारतीय आर्थिक विचारों का स्रोत है :
   (A) वैदिक साहित्य (B) स्मृति ग्रंथ
   (C) कौटिल्य का अर्थशास्त्र (D) उपरोक्त सभी
3. 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रंथ के रचयिता थे :
   (A) वाणभट्ट (B) विष्णुगुप्त (चाणक्य)
   (C) विशाखदत्त (D) चन्द्रगुप्त

[उत्तर : 1. (C), 2. (D), 3. (B)]

Scanned by PDF Scanner